शब्द-अर्थ

जी	—	मन
कढ़ी	—	निकली
देव	—	भगवान, ईश्वर
बदा	—	लिखा, निर्धारित
चू पड़ूँगी	—	टपक पड़ूँगी

Word Power

काल	—	समय
अनमनी	—	बेमन से reluctantly
अकसर	—	प्राय:
लौं	—	समान, की तरह

Scanned with CamScanner

18 मई, 2020 कक्षा-कार्य

पाठ- 4 एक बूँद

शब्दार्थ उ.C में लिखो।

गृह-कार्य

कक्षा-कार्य याद करो व कविता से दस कठिन शब्द छाँटकर R.C में लिखो।

Scanned with CamScanner

Date
Page No.

19 मई 2020

पाठ - 4
एक बूँद

सरलार्थ

1. ज्यों निकलकर .... मैं यों कढ़ी।

⇒ इस कविता में कवि ने एक बूँद के माध्यम से मनुष्य को जीवन में उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी है। पानी की एक बूँद बादलों की गोद से निकलकर कुछ आगे बढ़ी ही थी कि वह मन ही मन सोचने लगी कि मैं घर से क्यों निकली?

2. देव! मेरे भाग्य में .... के फूल में।

⇒ इस कविता में कवि ने एक बूँद के माध्यम से मनुष्य को जीवन में उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी है। हे भगवान! मेरे भाग्य में क्या लिखा है? मैं बच जाऊँगी या धूल में मिलकर समाप्त हो जाऊँगी। अँगारे पर गिरूँगी तो जल जाऊँगी या कमल के फूल पर गिरूँगी।

Scanned with CamScanner

19 मई, 2020 कक्षा-कार्य

पाठ- 4 एक बूँद

सरलार्थ 1, 2 उ. C में लिखो।

गृह-कार्य

कक्षा- कार्य याद करो व सरलार्थ 1, 2 से पाँच कठिन शब्द छाँटकर R.C में लिखो।

Scanned with CamScanner